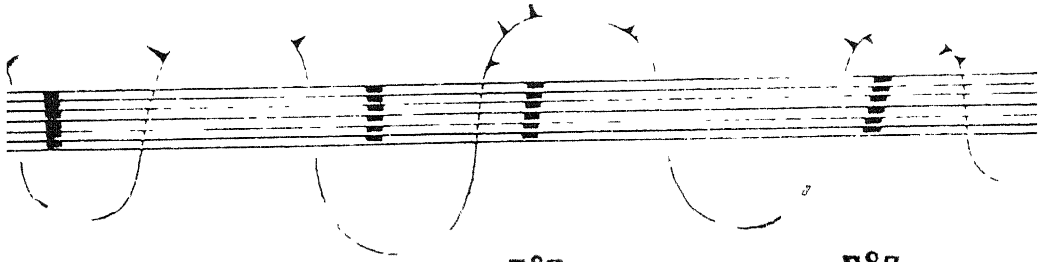
गजानन माधव मुक्तिबोध



चाँद का मुँह टेढ़ा है